आखर हिंदी पत्रिका; e-ISSN-2583-0597 खंड 6/अंक 1/मार्च 2026

Received: 15/03/2026; Revised: 19/03/2026; Accepted: 24/03/2026; Published: 28/03/2026

नीला चाँद के कथानक में इतिहास का स्वरूप/बोध

[1]डॉ. प्रकाश नारायण सिंह चैहान

सहायक प्राध्यापक, हिन्दी

कमला स्मृति महाविद्यालय सीधी (म.प्र.)

ईमेल- chauhan7106@gmail.com

[2]डॉ सुरेन्द्र बहादुर सिंह चैहान

सेवा नि. प्राध्यापक, हिन्दी

शास. कन्या महाविद्यालय सीधी (म.प्र.)

[1]डॉ. प्रकाश नारायण सिंह चैहान, [2]डॉ सुरेन्द्र बहादुर सिंह चैहान, नीला चाँद के कथानक में इतिहास का स्वरूप/बोध, आखर हिंदी पत्रिका, **खंड 6/अंक 1/मार्च 2026**,(51 -56)

https://doi.org/10.5281/zenodo.19496414

This work is licensed under CC BY-NC 4.0

अनुरूपी लेखक **[1] डॉ. प्रकाश नारायण सिंह चैहान,** सहायक प्राध्यापक, हिन्दी, कमला स्मृति महाविद्यालय सीधी (म.प्र.)

सह लेखक **[2]डॉ सुरेन्द्र बहादुर सिंह चैहान**, सेवा नि. प्राध्यापक, हिन्दी,शास. कन्या महाविद्यालय सीधी (म.प्र.)

सारांशः

नीला चाँद में 11 वीं शताब्दी की काशी को उसकी समग्रताओं में अंकित करने का प्रयास किया गया है इसमें मध्यकालीन इतिहास का एक जीवान्त दस्तावेज है जिसका फलक जुझौती से लेकर काशी कालिंजर से

चरणाद्रि (चुनार) और उज्जैयिनी तक से जुड़ा हुआ है। अनगढ़ और अस्त-व्यस्त दस्तावेजों से मध्यकाल का सजीव सांस्कृतिक इतिहास खड़ा करने का सफल प्रयास है।

'नीला चाँद' उपन्यास में लेखक एक ऐसी आस्था को लेकर चला है जिसका आधार ही ऐतिहासिक है। इस उपन्यास में लेखक ने ग्यारहवीं शताब्दी की काशी को उसकी समग्रताओं में अंकित करने का प्रयास किया है। लेखक ने भूमिका में कालखण्ड के चुनाव के संदर्भ में कहा है कि "मै मध्यकाल की वह काशी देखना चाहता था जो विदेशी आक्रान्ताओं से पहले थी। मुझे तदनुरूप किसी ऐसे समय को ढूढना था जिसने त्रिकंटक को भी हिला दिया हो, जहाँ 'धगद-धगद -धगद-ज्वलम' के भीतर नंदीश्वर के ज्योर्तिलिंग ने विशाल स्तंभ की तरह धरा और आकाश को जोड़ दिया हो वह समय मिल गया, जब कर्ण कलचुरी ने देववर्मा चंदेल की हत्या की। पूरी जुझौती को रौंदकर कर्णमेरू प्रसाद में अपने चारणो द्वारा नयी विरूदावली सुनी यानी कालं जराधिपतेः कालंजर अधिपति का काल। गहड़वाल कर्ण के पिता गांगयेदत्त के जमाने से ही जी मसोस कर रह गये, क्योंकि आवष्यक अश्वों और आरोहियो से उन्होने अपने को सज्जित नही किया था। लक्ष्मीकर्ण ने अपने पिता की ही तरह गाहड़वालों को मामूली सामन्त मानकर हमेशा दबाये रखा। उस समय की काशी है यह यानी ई0 1060 की।"1

नवी शताब्दी के प्रारम्भ में स्थापित चंदेल वंश में विद्याधर नाम के एक प्रतापी राजा (1025-35) हुए जिनका पौत्र देववर्मा कलचुरि नरेश लक्ष्मीकर्ण का समकालीन था। कर्ण ने उसे पराजित करके उसका उसका वध कर दिया। देववर्मा की पत्नी ने आत्मदाह कर लिया। देववर्मा की मृत्यु के ही पश्चात् उसके अनुज कीर्तिवर्मा (1060-1100ई0) ने शासन की कमान संभाली। कीर्तिवर्मा ने जैजाक मुक्ति या जुझौती (बुंदेलखण्ड की प्रजा) की मुक्ति के लिए असाधारण संघर्ष किया। इस महाअभियान में उसे गहड़वाल वंश के चन्द्रदेव के पौत्र गोविन्दचन्द्र का भी सहयोग मिला। ऐतिहासिक दृष्टि से निहारा जाए तो यह भारतीय समाज के पतन का काल रहा है, क्योंकि देशी सांमत (शासक) पारस्परिक झगड़ों से ग्रस्त और त्रस्त रहे है। समाज का नैतिक पतन अपने चरम बिन्दु पर था। दूसरी तरफ केन्द्रीय सत्ता की अनुपस्थिति के अभाव में विदेशी आक्रांता (शासक) इसके विस्तृत भू-भाग और धन-संपत्ति पर नजर गड़ाये बैठे थे। इतिहास में इसी कालखण्ड को लेखक ने व्यापक फलक पर पूरी सहानुभूति से और मनोयोग से रचने का प्रयास किया है। प्रसंसनीय यह है कि लेखक ने इस कालखण्ड कि विविध झांकियो, उसकी संस्कृति, रीति-रिवाज, तौर तरीकों को पकड़ने और बोधगम्य तथा सटीक भाषा में अभिव्यक्त करने का सार्थक प्रयास किया है।

'नीला चाँद' की मुख्य कथा कलचुरि कर्ण चंदेल कीर्तिवर्मा और गाहड़वाल गोविन्द के राजवशों के पारस्परिक संघर्ष और टकराव की है। कलचुरी कर्ण एक आततायी राजा है जिसके प्रति प्रजा में कोई निष्ठा अथवा आदर भाव नही है। दूसरी ओर "चंदेल कीर्तिवर्मा में एक लोकप्रिय शासक के सभी गुण मौजूद हैं। इसके अतिरिक्त अपने राज्य के भौगोलिक-सांस्कृतिक परिवेश की विलक्षण जानकारी है वह शूद्रों, अंत्यजों तथा निम्न वर्ण और धर्म के लोगों के प्रति इतना आत्मीय व्यवहार करतर हैकि वर्ग भेद और वर्ण भेद की ही सारी सीमाएँ लुप्त हो जाती है। जैजाक मुक्ति अथवा जूझौती को कर्ण से मुक्त कराने में बन्धु जीव, बब्बर नट,

भरत आदि अधम कोटि के पात्रों का सक्रिय सहयोग प्राप्त करना इसी जनाभिमुख दृष्टि के कारण संभव हुआ है।"2

उपान्यास में कथानक और पात्र दोनो के ऐतिहासिकता की रक्षा हुई है। "विद्याधर, देववर्मा, कीर्तिवर्मा, मंत्री अनन्त रज्जुक गहड़वाल, सेनापति गोपाल भट्ट, चन्द्रदेव मुंज भोज, राजमाता भुवना देवी और भर्तृहरि आदि सभी पात्र ऐतिहासिक है। लक्ष्मी कर्ण द्वारा देव वर्मा की हत्या, खजुराहो के मंदिर में लूटपाट, कन्नौज के राज्यपाल की कायरता चंदेल शासको के यहाँ ब्राह्मणों अमात्यों की परम्परा, कर्ण और भोज द्वारा मंदिर निर्माण की प्रतिस्पद्र्धा, तुर्क नियाल्तगीन द्वारा काशी कर लूट, काशी में वज्रयानियों की वामाचारी, साधना, गणिका, देवदासी प्रथा अस्पृष्यों के प्रति अमानवीय व्यवहार और उपन्यास के अन्त में कीरत द्वारा लक्ष्मी कर्ण का मान मर्दन ये सभी इतिहास सत्य है।"3

चंदेल वंश की उत्पत्ति के संदर्भ में शिव प्रसाद सिंह ने 'नीला चाँद' में कहा है- "इस राजवंश के संस्थापक काशी में तपस्यारत ऋषि चन्द्रमा थे वे ब्रह्मा के मानस पुत्र अत्रि के नेत्र से उत्पन्न हुए थे। वे ही चन्द्रात्रेय के नाम से (विख्यात) प्रसिद्ध तपस्वी जीवन व्यतीत कर रहे थे। काशी के राजा इन्द्रजीत के पुरोहित हेमराज की कन्या हेमवती एक बार जब रति सरोवर में स्नान कर रही थी तो उसके रूप से मोहित होकर ऋषि चन्द्रात्रेय ने उसका आलिंगन किया। कुमारी ब्राह्मण कन्या ने शाप देने के लिए हाथ में जल लिया ही था कि ऋषि ने कहा 'तुम मुझे शाप मत दो।' तुम्हारे गर्भ से एक ऐसा पुत्र रत्न पैदा होगा जो भारत -विश्रुत राजवशों का संस्थापक बनेगा। सारे विष्व मे उसकी कीर्ति का विस्तार होगा।"4

हेमवती के स्खलन दोष निवारण के बारे में पूछने पर ऋषि ने कहा "तुम्हारा पुत्र जब सोलह साल का होगा तब वह एक महान यज्ञ को सम्पन्न करेगा जिससे तुम्हारे स्खलन का दोष समाप्त हो जायेगा। ब्राह्मण कन्या काशी छोड़कर विंध्य की ओर चल पड़ी। उसे पुत्र की प्राप्ति हुई और उसने अपनी माता की शुद्धि के लिए महोत्सव किया वही स्थान महोबा के नाम से विख्यात हुआ।"5

इसकी पुष्टि आचार्य केशवचन्द्र मिश्र की पुस्तक 'चंदेल वंश और उनका राजत्व काल' से होता है। आचार्य मिश्र वंशवली का आरम्भ मुनिचन्द्रात्रेय से मानते है और उनका समय 740 ई. रखते है। चंदेल वंश और खजुराहो पर केन्द्रित आचार्या पूनम चन्द्र तिवारी की प्रसिद्ध कृति 'खजुराहो महाकाव्य' में भी डा. शिव प्रसाद सिंह का ही समर्थन किया गया है। "चंदेल वंश की उत्पत्ति (काशी) के गहड़वार राजा इन्द्रजीत के पुरोहित हेमराज की कन्या हेमवती के गर्भ से हुई है। चन्द्रमा और हेमवती से उत्पन्न चन्द्रवर्मा इस कुल का पूर्व पुरूष था। चन्द्रमा ने आठवीं शताब्दी मे यज्ञ किया और महोबा नगर बसाया।"6 शिव प्रसाद सिंह जी ने खजुराहो के प्रसिद्ध ऐतिहासिक लक्ष्मण मंदिर का भी जिक्र नीला चाँद में किया है। राजमाता भुवना देवी कीरत से कहती है- "इस मूर्ति को प्रणाम कर इसलिए नही की ये त्रिभुवन के पालनकर्ता विष्णु की बैकुण्ठ मूर्ति है, बल्कि इसलिए कि इस मूर्ति के साथ चन्द्रात्रेय वंश की दिग्विजय की कहानी भी जुड़ी है। यह तेरे वंश की वैजयन्ती है। तेरे पूर्वज प्रथम सम्राट महाराज यशो वर्मा ने हेरमबपाल के पुत्र ह्यपति देवपाल से

बैकुण्ठ की यह मूर्ति प्राप्ति की जिसे मूलतः भोटनाथ नामक राजा ने कैलाश पर्वत से प्राप्त किया था।"7 भुवना देवी का कथन ऐतिहासिक सत्य ही है। इसका उल्लेख पूनम चन्द्र तिवारी की पुस्तक "खजुराहो महाकाव्य" में भी मिलता है, यशो वर्मा ने दिग्विजय यात्रा करके सारे उत्तर भारत को पराजित किया और विष्णु की वह त्रिमुखी मूर्ति जो तिब्बत के भोटनाथ के पास से मित्र के रूप में केर के राजा शाही से प्राप्ति की थी तथा जिसे प्रतिहार सम्राट हेरमबपाल शक्ति पूर्वक छीनकर कन्नौज ले आया था, उसी मूर्ति को यशो वर्मा ने हेरमबपाल के पुत्र देवपाल ह्यपति से बलपूर्वक प्राप्त करके खजुराहो के लक्ष्मण मंदिर में स्थापित किया।"8

"चन्देल राजवंश में धंग भारत की राष्ट्रीय एकता का अपने युग का सर्वोच्च नायक था। उसने राज्य विस्तार किया। कांलिजराधिपति कहलाया। धंग के बाद उसके पुत्र गंड ने (1000ई.- 1025ई.) अपने प्रबल पराक्रम का परिचय दिया। जब 1000 ई. में महमूद गजनवी ने आनन्दपाल पर आक्रमण किया तब गुंड ने वहां सेना सहित पहुंचकर उनकी सहायता की। गुंड के बाद उनका प्रतापी पुत्र विद्याधर (1025ई.- 1040ई.) लगातार युद्धों से जूझता रहा।"9

"महमूद गजनवी ने 1018 में कन्नौज के शासक राज्यपाल प्रतिहार पर आक्रमण किया। कन्नौज के राजा राज्यपाल नें आक्रमकों (महमूद गजनवी) को आगे बढ़ने के लिए रास्ता दे दिया विद्याधर ने यह सुना तब भारत की अर्गला खोल देने के लिए राज्यपाल को धिककारा और दोनों में संघर्ष हो गया। ग्वालियर के सामंत अर्जुन कछवाहे ने राज्यपाल की गर्दन की हड्डी को छत-विछत करके उसे मार डाला।"10 ये सारी घटनाएँ इतिहास सम्मत सत्य है। इसका उल्लेख आचार्य पूनम चन्द्र तिवारी की पुस्तक 'खजुराहो महाकाव्य' में पृष्ठ क्रमांक 05 पर किया गया है, तथा डा. रमेशचन्द्र श्रीवास्तव की पुस्तक 'बुन्देलखण्ड' में इस घटना का समर्थन प्राप्त होता है। कि "गंडदेव महमूद गजनवी के आक्रमणों को रोकने के लिए राजाओं के साथ संयुक्त रूप से मुकाबला करने के लिए अपने पुत्र विद्याधर को (सीमांत प्रदेश) जयपाल के सहायतार्थ भेजा किन्तु कन्नौज नरेश राज्यपाल की कायरता से योजना सफल न हो पायी। विद्याधर ने राज्यपाल का वध कर त्रिलोचन पाल को राजा बनाया।"11 इस ऐतिहासिक घटना का समर्थन डा. विजयपाल सिंह ने अपनी पुस्तक "खजुराहों से महोबा" में पृष्ठ क्र. 25 में किया है।

"इस घटना से नाराज होकर महमूद पहले से दूनी शक्ति के साथ चल पड़ा और उत्तर भारत को रौंदते हुए चंदेलों से जा टकराया इसके अलावा बाकी कोई भी राज्य ऐसा था ही नही जो उसे रोेक सके। तीन दिन तक ग्वालियर, दुर्ग के लिए युद्ध होता रहा और अन्त में उसका पतन हुआ। अर्जुन कछवाहे के हाथ से ग्वालियर निकल गया फिर महमूद ने कालिंजर को घेर लिया। यह पहली घटना थी कि महमूद चंदेलों से संधि के लिए विवष हुआ, वह डर रहा था कि कहीं इस दुर्गम प्रदेष से निकलने का रास्ता बन्द न हो जाए, इसलिए उसने विद्याधर देव को 15 अन्य दुर्गों का शासन भार भी उपहार में प्रदान किया और परिधान, रत्नादि बहुमूल्य वस्तुएँ भेजी।"12 इसका भी समर्थन डा. श्रीवास्तव ने अपनी पुस्तक

बुन्देलखण्ड में किया है। "महमूद ने ग्वालियर तथा कालिंजर पर चढ़ाई कर दी किन्तु विजय श्री प्राप्त न कर सका, समानता की संधि हो गई।"13

उपन्यास में नायक के विषेष सहयोगी सेनापति गोपाल भट्ट, मंत्री अनन्त और राज्य कवि श्रीकृष्ण मिश्र का नाम आया है। इन तीनों पात्रों को भी इतिहास का समर्थन उपन्यासकार ने बराबर दिया है। "विद्याधर चंदेल ने कलचुरि शासक गांगेय देव (1015ई.-1040ई) को हराया किन्तु विद्याधर के समय तक चंदेल प्रतिष्ठा तो बढ़ती गयी और चंदेल वंश की वही प्रतिष्ठा उनके मरणोपरान्त डगमगाने लगी। विद्याधर का पुत्र विजयपाल (1040ई.-1050ई.) शांतिप्रिय निर्बल शासक था। देव र्मा मात्र दो वर्ष राज्य कर पाया (1050ई.-1100ई.) ने खोई हुई प्रतिष्ठा को पुर्नप्राप्त करने का प्रयास किया। उसने कर्ण देव को परास्त कर खोया हुआ भाग और सम्मान प्राप्त कर लिया। उसके मंत्री महिपाल एवं अनन्त थे।"14 डा. विजयपाल सिंह की प्रसिद्ध पुस्तक 'खजुराहो से महोबा' में गोपाल भट्ट की ऐतिहासिकता का वर्णन किया गया है। "कीर्तिवर्मा के सामने राज्यलक्ष्मी का पुनस्थापना का कठिन कार्य सामने था। चेदियो के अत्याचार से पीड़ित वनवासियों को संगठित व प्रशिक्षित किया। इस कार्य में उसे सकल समान्त चक्र चुड़ामणि गोपाल से सबसे बड़ी सहायता मिली। 'प्रबोध चन्द्रोदय' नाटक इस पुर्नप्राप्ति के प्रयास को इस प्रकार रूपायित करता है। जिस गोपाल प्रतापानल से समस्त त्रिभुवन व्याप्त था उसने अपनी तलवार से समस्त विरोधी नरेश को विजित करके कीर्तिवर्मन को पुनः राज्यासीन किया।"15 श्री कृष्ण मिश्र राजकुमार कीर्तिवर्मा के राज्याश्रित कवि थे इसकी पुष्टि आचार्या पूनम तिवारी की पुस्तक 'खजुराहो महाकाव्य' से हो जाती है "विद्याधर के बाद प्रबल प्रतापी चंदेल शासक कीर्तिवर्मा (1060ई.-1100ई.) ने पुनः और शक्ति संगठित की और लक्ष्मीकर्ण को हराया। कीर्ति वर्मा के राज्याश्रित कवि कृष्ण मिश्र ने संस्कृत साहित्य की अक्षय कृति 'प्रबोध चन्द्रोदय' नाटक लिखा। यह नाटक 11वीं सताब्दी का मानसिक और दार्शनिक चित्रण कराता है।"16

उपन्यास में गाहड़वाल नरेश, नृपतिचन्द्र, मदनचन्द्र का और गोविन्द चन्द्र का नाम आता है। मदनचन्द्र की बीमारी तथा राल्ह देवी और पृथ्वीश्री का भी उल्लेख हुआ है। इन सभी पात्रो को इतिहास अपना समर्थन देता है। डा. मोतीचन्द्र की विख्यात पुस्तक 'काशी का इतिहास' में कहा गया है- "जब चारो तरफ अराजकता फैल रही थी हिन्दू क्षुभित होने पर भी सार्वभौम राज्य सत्ता के बिना अपने ऊपर होने वाले अत्याचारो का प्रतिकार करने में असमर्थ थे। उसी समय मध्यप्रदेष में गाहड़वाल वंश में चन्द्रदेव नामक एक वीर उत्पन्न हुआ जिसने अपनी वीरता और प्रताप से जैसा उसका एक लेख कहता है, प्रजोपद्रव को शान्त कर दिया- 'येनोदार प्रताप शामिता शेष प्रजोपद्रवाः"।17 गाहड़वालों के आधुनिक वंशज गरहवार है, और मिर्जापुर में कंतित रियासत के राजा इसी जाति के हैं।

"चन्द्रदेव की मृत्यु के बाद मदनपाल (1100ई. से 1104ई.) के बीच गद्दी पर बैठे। लेखो में इन्हे मदनदेव और मदनचन्द्र भी कहा गया है। राज्य का सब कारोबार गोविन्दचन्द्र करते थे और अपनी माताओं के नाम पर (राल्ह देवी और पृथ्वी श्री) दानपत्र निकाला करते थे। इसका कारण शायद गोविन्दचन्द्र का गरू

गंभीर व्यक्तित्व रहा हो।"18 पर इसका कारण मदनचन्द्र की बीमारी भी हो सकती है अगर यह सही है तो शायद अपनी बीमारी में उन्होने चिकित्सा शास्त्र का अध्ययन किया हो। और मदन-विनोद निघंटु जिसका रचयिता काशी का मदन नाम का राजा कहा जाता है, मदन पाल द्वारा लिखा हुआ संकलन हो। लेखक ने नीला चाँद में अहमद नियाल-तिगिन द्वारा बनारस की लूट का उल्लेख किया है "तुर्क सेनापति नियाल-तिगिन ने सिर्फ पांच सौ घुड़सवारों को लेकर काशी तक पाया मारा इसके सैनिकों ने स्वर्णकारों, श्रोष्ठियों, बजाजों और असुरक्षित मंदिरो से धन सम्पत्ति लूट ली।"19 यह घटना भी सत्य पर आधारित ऐतिहासिक घटना है जिसका जिक्र डा. मोतीचन्द्र की पुस्तक 'काशी का इतिहास' में है गांगेयदेव के राज्य की मुख्य घटना अहमद नियाल-तिगिन द्वारा 1033 ई. में बनारस की लूट थी। बनारस की लूट से पता चलता है कि गांगेयदेव का राज्य प्रबंधन काफी शिथिल था।

वस्तुतः नीला चाँद में इतिहास के गवाक्ष से तत्कालीन काशी के जीवन को देखने का सफल प्रयास किया गया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. डानीला चाँद -शिव प्रसाद सिंह ., भूमिका, पृष्ठ संख्या 10-11
2. जनपक्ष -15 पत्रिका 2017, पृष्ठ संख्या 62 -63
3. जनपक्ष -15 पत्रिका 2017, पृष्ठ संख्या 62 -63
4. 'नीला चाँद'- शिव प्रसाद सिंह, पृष्ठ संख्या 165 -166
5. 'नीला चाँद'-शिव प्रसाद सिंह, पृष्ठ संख्या166
6. खजुराहो महाकाव्य आचार्य पूनम चन्द्र तिवारी पृष्ठ संख्या -02(भूमिका से।(
7. शिव प्रसाद सिंह - नीला चाँद पृष्ठ क्र .17, ।
8. खजुराहो महाकाव्य पूनमचन्द्र तिवारी पृष्ठ क्रमांक .डा- (भूमिका)03
9. 'खजुराहो महाकाव्य' (भूमिका .पूनम चन्द्र तिवारी पृष्ठ क्र .डा (02
10. 'नीला चांद', शिव प्रसाद सिंह पृष्ठ क्र .19
11. 'बुन्देलखण्ड'- साहित्यिक, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक वैभव, डारमेशचन्द्र श्रीवास्तव . पृष्ठ क्र .159
12. 'नीला चांद', शिव प्रसाद सिंह पृष्ठ क्र .20
13. 'बुन्देलखण्ड'- साहित्यिक, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक वैभव, डा .रमेशचन्द्र श्रीवास्तव पृष्ठ क्र .159
14. 'बुन्देलखण्ड'- साहित्यिक, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक वैभव, डा .रमेशचन्द्र श्रीवास्तव पृष्ठ क्र .159
15. खजुराहो से महोबा विजयपाल सिंह पृष्ठ क्रमांक .डा -30
16. खजुराहो महाकाव्यचन्द्र तिवारीपूनम (भूमिका) -, पृष्ठ क्रमांक 05
17. काशी का इतिहासमोतीचन्द्र .डा -, पृ संख्या .113

18. काशी का इतिहासमोतीचन्द्र .डा -, पृ संख्या .113

19. नीला चाँद, शिव प्रसाद सिंह पृ संख्या .35

****